IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाल विकास में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पारिवारिक भूमिका का अध्ययन

मनोरमा विश्वकर्मा[1] डॉ. निधि अवस्थी[2]

[1]पी.एच.डी. शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, थनरा, करैरा, शिवपुरी (म.प्र.)

[2]शोध निर्देशक, गृह विज्ञान विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, थनरा, करैरा, शिवपुरी (म.प्र.)

सारांश

यह अध्ययन "बाल विकास में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पारिवारिक भूमिका का अध्ययन" बच्चों के शैक्षणिक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास पर सामाजिक और पारिवारिक कारकों के प्रभाव को समझने हेतु किया गया। इस शोध में मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसमें 384 प्रतिभागियों से प्राप्त मात्रात्मक आँकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ़्टवेयर द्वारा किया गया, जबकि गुणात्मक जानकारी अभिभावकों और शिक्षकों के साक्षात्कारों से प्राप्त हुई। विश्लेषण के परिणामों से यह पाया गया कि परिवार की आय (β=.186), माता-पिता की शिक्षा (β=.198) और आर्थिक असमानता (β=.203) बच्चों के विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वहीं पारिवारिक मूल्य (β=.222), माता-पिता की भागीदारी (β=.167) और समय व्यतीत करना (β=.168) बच्चों की भावनात्मक और शैक्षणिक प्रगति के लिए निर्णायक सिद्ध हुए। अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि केवल आर्थिक स्थिरता ही नहीं, बल्कि पारिवारिक सहयोग, नैतिक मूल्य और भावनात्मक समर्थन भी बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। अतः नीति निर्माताओं को सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने और अभिभावकीय सहभागिता को बढ़ावा देने हेतु एकीकृत रणनीति अपनानी चाहिए।

मुख्य शब्द: बाल विकास, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक भूमिका, माता-पिता की भागीदारी, पारिवारिक मूल्य, आर्थिक असमानता, शिक्षा, भावनात्मक सहयोग, SPSS विश्लेषण, समग्र विकास

1. परिचय

बाल विकास और शैक्षिक परिणाम सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों और पारिवारिक वातावरण से गहराई से प्रभावित होते हैं। किसी बच्चे की संज्ञानात्मक क्षमताएँ मुख्य रूप से माता-पिता की आय, शिक्षा और घरेलू भागीदारी जैसे कारकों पर निर्भर करती हैं। निम्न-आय वाले परिवारों के बच्चे अक्सर स्कूल की तैयारी और शैक्षणिक उपलब्धियों में अपने साथियों से पीछे रह जाते हैं, जिसका प्रमुख कारण संसाधनों और सहयोगी तंत्रों तक सीमित पहुँच है (चकुया, 2016)। ये प्रारंभिक असमानताएँ बच्चे की सीखने की दिशा पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकती हैं।

आर्थिक स्थिति के साथ-साथ, पारिवारिक गतिशीलताएँ जैसे पालन-पोषण की शैली, भावनात्मक उपलब्धता और पारिवारिक स्थिरता भी बच्चे के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करती हैं। सहायक और सुरक्षित पारिवारिक वातावरण बेहतर भावनात्मक नियंत्रण और सीखने के व्यवहार को प्रोत्साहित करता है (नीमान्टे, 2023)। इसके विपरीत, जब सामाजिक-आर्थिक तनाव माता-पिता के मानसिक स्वास्थ्य या पालन-पोषण की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, तो बच्चों के शैक्षणिक और भावनात्मक परिणामों में गिरावट देखी जाती है (अखमेदोवा आदि, 2025)।

1.1. भारतीय परिप्रेक्ष्य में बाल विकास की समझ

भारतीय संदर्भ में बाल विकास को समझने के लिए सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक और क्षेत्रीय कारकों के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण आवश्यक है, जो बच्चों के विकास और कल्याण को विशिष्ट रूप से आकार देते हैं। भारत की व्यापक विविधता पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे बाल विकास संकेतकों में असमानताओं को जन्म देती है, जहाँ हाशिए पर स्थित समुदाय अक्सर पीछे रह जाते हैं। हालिया अध्ययनों से पता चलता है कि यद्यपि स्वास्थ्य और शिक्षा के राष्ट्रीय औसत में सुधार हुआ है, परंतु राज्यों के बीच बाल विकास के परिणामों में व्यापक अंतर हैं, जो मुख्यतः सार्वजनिक नीतियों के कार्यान्वयन और संसाधन वितरण की असमानताओं के कारण हैं (नागपाल, 2020)।

इसके अतिरिक्त, ग्रामीण भारतीय संदर्भों में अंतरराष्ट्रीय बाल विकास मूल्यांकन उपकरणों को अनुकूलित करने के प्रयास इस बात पर बल देते हैं कि सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और संदर्भ-विशिष्ट दृष्टिकोण आवश्यक हैं। इससे संज्ञानात्मक और विकासात्मक प्रगति का सटीक आकलन संभव होता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ मानकीकृत उपकरण स्थानीय वास्तविकताओं को ठीक से प्रतिबिंबित नहीं कर पाते (चंद्रशेखर आदि, 2024)। ये सभी तथ्य भारत में समग्र बाल विकास को प्रोत्साहित करने के लिए समावेशी और स्थानीयकृत रणनीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

1.2. सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सीखने के परिणामों पर प्रभाव

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) भारत में बच्चों के सीखने के परिणामों को गहराई से प्रभावित करती है। यह बच्चों की पोषण तक पहुँच, शैक्षणिक सहयोग, और घरेलू सीखने के वातावरण को निर्धारित करती है। निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के बच्चों को अक्सर सीमित संसाधनों और शैक्षणिक अवसरों की कमी के कारण संज्ञानात्मक और शैक्षणिक प्रदर्शन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। **नीमान्टे (2023)** के एक हालिया अध्ययन ने बताया कि पारिवारिक आय, माता-पिता की शिक्षा और जीवन-परिस्थितियाँ बच्चे के प्रारंभिक विकास को गहराई से प्रभावित करती हैं, जो सीधे तौर पर विद्यालय की तैयारी और दीर्घकालिक शैक्षणिक उपलब्धियों से जुड़ी होती हैं (नीमान्टे, 2023)। इसी तरह, **डाल्माइजर आदि (2019)** ने पाया कि भारतीय बच्चों में सामाजिक-आर्थिक कारक जैसे पड़ोस की वंचितता और पारिवारिक संपन्नता सीधे शैक्षणिक परिणामों को प्रभावित करते हैं, विशेषकर संज्ञानात्मक विकास और मानसिक स्वास्थ्य के माध्यम से (डाल्माइजर आदि, 2019)। ये निष्कर्ष इस बात पर जोर देते हैं कि सीखने की खाई को पाटने के लिए आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए लक्षित हस्तक्षेप और विकासात्मक सहायता अत्यंत आवश्यक है।

1.3. बाल विकास और शिक्षा में पारिवारिक वातावरण की भूमिका

पारिवारिक वातावरण बच्चे के समग्र विकास की बुनियाद है, जो उसके संज्ञानात्मक, भावनात्मक और शैक्षिक परिणामों को आकार देता है। भावनात्मक स्नेह, नियमित दिनचर्या, उत्तरदायी संवाद और सहायक पालन-पोषण जैसे घटक बच्चों के मस्तिष्क विकास और सीखने की तैयारी के लिए अनुकूल वातावरण बनाते हैं। **कृष्णा आदि (2021)** के अध्ययन ने यह रेखांकित किया कि प्रारंभिक विकास कार्यक्रमों में बाल संरक्षण और मानसिक स्वास्थ्य सहायता को शामिल करने से प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियों के प्रभाव को कम किया जा सकता है और सीखने की तत्परता को बढ़ाया जा सकता है (कृष्णा आदि, 2021)। इसी प्रकार, **युगोवा (2021)** ने यह बताया कि स्थायी माता-पिता-बच्चे के संबंध और भावनात्मक रूप से सुरक्षित घर बेहतर भाषण, संज्ञानात्मक विकास और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करते हैं (युगोवा, 2021)।

इसके विपरीत, उपेक्षा, उत्तेजना की कमी या माता-पिता के कमजोर मानसिक स्वास्थ्य से ग्रस्त अस्थिर पारिवारिक वातावरण बच्चों की शिक्षा में गंभीर बाधा उत्पन्न कर सकता है। **मिश्रा और अज़ीज़ (2014)** ने पाया कि नकारात्मक पारिवारिक और सामाजिक-मानसिक परिस्थितियाँ भारत में विद्यालय छोड़ने के प्रमुख कारणों में से एक हैं, जो यह दर्शाती हैं कि परिवार बच्चे की सीखने की निरंतरता को गहराई से प्रभावित करता है (मिश्रा और अज़ीज़, 2014)। इसके अलावा, **हार्टस (2011)** ने देखा कि पारिवारिक शैक्षिक अभ्यास और मातृ शिक्षा बच्चों की प्रारंभिक भाषा और सामाजिक दक्षता के सशक्त पूर्वानुमानक हैं (हार्टस, 2011)। अतः

सहायक घरेलू वातावरण का निर्माण बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों और भावनात्मक दृढ़ता दोनों को बढ़ाने के लिए अत्यावश्यक है।

1.4. आर्थिक परिस्थितियों और शैक्षणिक पहुँच के बीच अंतर्संबंध

आर्थिक परिस्थितियाँ शैक्षणिक पहुँच से गहराई से जुड़ी होती हैं, विशेष रूप से विकासशील देशों जैसे भारत में, जहाँ आय असमानता अक्सर बच्चे की शिक्षा प्राप्त करने और उसमें सफल होने की क्षमता को निर्धारित करती है। सीमित घरेलू आय के कारण परिवार बच्चों को मूलभूत शैक्षणिक संसाधन — जैसे विद्यालय सामग्री, वर्दी और परिवहन — उपलब्ध नहीं करा पाते, जिससे अनुपस्थिति और विद्यालय छोड़ने की संभावना बढ़ जाती है। चक्रवर्ती आदि (2019) के एक अध्ययन में पाया गया कि भारत की समेकित बाल विकास सेवा (ICDS) योजना में वित्तीय और क्षेत्रीय असमानताओं ने सेवा वितरण को प्रभावित किया, जिससे गरीब जिलों को अपेक्षाकृत कम संसाधन मिले और वंचित बच्चों के लिए शैक्षणिक समर्थन सीमित रह गया (चक्रवर्ती आदि, 2019)। इसी तरह, नकद हस्तांतरण कार्यक्रमों से यह स्पष्ट हुआ कि आर्थिक सहायता मिलने के बावजूद, कमजोर अवसंरचना — जैसे स्वच्छता और परिवहन की कमी — शैक्षणिक परिणामों को कमजोर कर सकती है (वीवर और सुक्थनकर, 2024)।

इसके अतिरिक्त, आर्थिक दबाव के कारण कई निम्न-आय परिवारों में बच्चे प्रारंभिक श्रम में शामिल हो जाते हैं, जिससे उनकी शिक्षा बाधित होती है। थनेश और उथायकुमार (2014) के एक क्षेत्रीय अध्ययन में पाया गया कि माता-पिता की शिक्षा, घरेलू आय और निजी ट्यूशन की उपलब्धता जैसे कारक बच्चों की शैक्षणिक दिशा को गहराई से प्रभावित करते हैं (थनेश और उथायकुमार, 2014)। इसके अलावा, नारायण (2024) के संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य (UN-SDG) ढांचे के विश्लेषण से पता चला कि जिन जिलों में पोषण और आय स्तर कमजोर हैं, वे शिक्षा में भी पिछड़े हुए हैं, जो समावेशी और समानता-आधारित नीतियों की आवश्यकता को दर्शाता है। ये निष्कर्ष इस बात को सुदृढ़ करते हैं कि आर्थिक स्थिरता में सुधार सार्वभौमिक और समावेशी शैक्षणिक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

1.5. समग्र बाल विकास के लिए एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता

बाल विकास के समग्र दृष्टिकोण में स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और मनो-सामाजिक कल्याण को एक साथ शामिल किया जाना चाहिए, क्योंकि ये सभी आयाम एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं और सामूहिक रूप से बच्चे के भविष्य को आकार देते हैं। खंडित प्रयास अक्सर बच्चों की जटिल आवश्यकताओं को पूरा करने में असफल रहते हैं, विशेषकर वंचित समुदायों में। एकीकृत दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि हस्तक्षेप बाल-केंद्रित हों, स्थानीय संदर्भों के अनुरूप हों और विकास के प्रत्येक चरण में सहयोगी बने रहें।

भारत की समेकित बाल विकास सेवा (ICDS) योजना इसका एक प्रमुख उदाहरण है। यह महत्वाकांक्षी योजना होने के बावजूद, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों के बीच समन्वय की कमी के कारण कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं (राव और कौल, 2018)। इसी प्रकार, प्रारंभिक बाल देखभाल में बाल संरक्षण और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का समावेश विकासात्मक परिणामों को सुदृढ़ करने और कमजोर बच्चों में आत्म-सहनशीलता विकसित करने में सहायक सिद्ध हुआ है (कृष्णा आदि, 2021)। इसलिए, एक समन्वित, बहु-क्षेत्रीय रणनीति आवश्यक है ताकि बच्चे के विकास के सभी पहलुओं को समान रूप से और स्थायी रूप से पोषित किया जा सके।

2. समस्या विवरण

भारत में बच्चों का समग्र विकास सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पारिवारिक माहौल पर गहराई से निर्भर करता है। निम्न आय वर्ग के परिवारों में संसाधनों की कमी, अभिभावकों की सीमित शिक्षा, और अस्थिर पारिवारिक वातावरण बच्चों की सीखने की क्षमता और मानसिक विकास को प्रभावित करते हैं। दूसरी ओर, उच्च आय वर्ग के बच्चों को बेहतर शैक्षणिक संसाधन, पोषण और सामाजिक समर्थन मिलता है। इस असमानता से बच्चों के बीच विकासात्मक अंतर बढ़ता जा रहा है। परिवार की भूमिका—जैसे अभिभावक का समय, भावनात्मक सहयोग, और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण—भी बच्चे के सीखने और व्यवहार को आकार देती है। यह अध्ययन इन सामाजिक और पारिवारिक तत्वों के बीच के संबंधों को समझने और उनके बच्चों के विकास पर प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास है।

3. अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन बाल विकास में सामाजिक-आर्थिक और पारिवारिक कारकों की वास्तविक भूमिका को उजागर करने में महत्वपूर्ण है। इसके निष्कर्ष नीति निर्माताओं, शिक्षकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और विकास कार्यक्रम बनाने में सहायता देंगे। यह शोध बताएगा कि कैसे पारिवारिक सहयोग, आर्थिक स्थिरता, और माता-पिता की शिक्षा बच्चों के सीखने और व्यक्तित्व निर्माण में योगदान करती है। अध्ययन के परिणाम समाज में समान अवसर, पारिवारिक जागरूकता, और बच्चों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करेंगे।

4. उद्देश्य

1. बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणामों पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. बच्चों के विकास और शिक्षा में परिवार की भूमिका का मूल्यांकन करना।

5. साहित्य समीक्षा

राव (2018) ने भारत की समेकित बाल विकास सेवा (ICDS) योजना में संरचनात्मक और कार्यान्वयन संबंधी चुनौतियों को रेखांकित किया, यह तर्क देते हुए कि यद्यपि यह योजना महत्वाकांक्षी है, परंतु इसके खंडित क्रियान्वयन और क्षेत्रों के बीच कमजोर समन्वय के कारण इसका प्रभाव समग्र बाल विकास पर सीमित रहता है। योजना में स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण का पूर्ण एकीकरण न हो पाने से विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा-प्रदायन की खाई उत्पन्न होती है। कृष्णा (2021) ने इस विचार को और बल देते हुए प्रारंभिक बाल विकास कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य और बाल संरक्षण सेवाओं के समावेश की आवश्यकता पर जोर दिया, जिन्हें अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। इसी बीच, वीवर (2024) ने पाया कि भारत में बच्चों के विकास को सुधारने के लिए लागू नकद हस्तांतरण कार्यक्रमों ने पोषण में तो सुधार किया, लेकिन जिन क्षेत्रों में स्वच्छता और विद्यालयी अवसंरचना अपर्याप्त थी, वहाँ शैक्षणिक उपलब्धियाँ बेहतर नहीं हो सकीं। चक्रवर्ती (2019) ने यह भी पुष्टि की कि ICDS को सार्वभौमिक बनाने के प्रयासों के बावजूद, समान पहुंच अभी भी एक बड़ी चुनौती है, विशेषकर हाशिए पर स्थित समुदायों के लिए। सामूहिक रूप से, ये सभी अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा, स्वास्थ्य और मनो-सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए एक पूर्णत: एकीकृत और संदर्भ-संवेदी दृष्टिकोण आवश्यक है।

डाल्माइजर (2019) ने यह विश्लेषण किया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) शैक्षणिक परिणामों को अप्रत्यक्ष रूप से कैसे प्रभावित करती है, विशेषकर मानसिक स्वास्थ्य, दृष्टिकोण और संज्ञानात्मक क्षमताओं के माध्यम से। निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चे अक्सर मनोवैज्ञानिक दबावों का सामना करते हैं, जो उनके ध्यान और स्मरणशक्ति को बाधित करते हैं और परिणामस्वरूप उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ घट जाती हैं। मिश्रा (2014) ने भारतीय संदर्भ में इसी प्रकार के पैटर्न की पहचान की, जहाँ अस्थिर पारिवारिक परिस्थितियाँ—विशेषकर आर्थिक कठिनाइयाँ और माता-पिता की उपेक्षा—विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति से गहराई से जुड़ी पाई गईं। हार्टस (2011) ने यह जोड़ा कि माता-पिता की शैक्षिक योग्यता और उनकी बच्चों की शिक्षा में भागीदारी, आर्थिक स्थिति समान रहने पर भी, बच्चों की प्रारंभिक साक्षरता और सामाजिक कौशल पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। युगोवा (2021) ने आगे यह बताया कि पारिवारिक वातावरण बच्चों के भावनात्मक और भाषण विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है, और पालन-पोषण की शैली तथा भावनात्मक माहौल का बच्चों के दीर्घकालिक विकास पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। इन सभी निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि केवल भौतिक संसाधनों से अधिक, भावनात्मक स्थिरता और अभिभावकीय सहभागिता सकारात्मक शैक्षणिक परिणामों के लिए आवश्यक तत्व हैं, और दीर्घकालिक सफलता हेतु हस्तक्षेपों को इन घरेलू प्रभावों को संबोधित करना अनिवार्य है।

नारायण (2024) ने संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (UN-SDGs) के ढांचे का उपयोग करते हुए बाल विकास परिणामों का विश्लेषण किया और पाया कि भारत के जिन जिलों में आर्थिक और स्वास्थ्य संकेतक कमजोर हैं, वे शिक्षा से संबंधित मापदंडों में लगातार खराब प्रदर्शन करते हैं। यह क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने के लिए स्थानीयकृत नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता

को रेखांकित करता है। थनेश (2014) ने इस निष्कर्ष का समर्थन करते हुए बताया कि सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित परिवारों के बच्चों को अनियमित उपस्थिति और शैक्षणिक संसाधनों की कमी जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ कमजोर रहती हैं। इसी प्रकार, नागपाल (2020) ने भारतीय राज्यों के बीच बाल विकास में व्यापक अंतर देखा, विशेष रूप से शिक्षा और पोषण के क्षेत्र में, और यह भी पाया कि राज्य-स्तरीय आर्थिक असमानताएँ बुनियादी सेवाओं तक पहुँच को निर्धारित करती हैं। ये सभी अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि शैक्षणिक पहुँच और सफलता केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक कारकों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि व्यापक क्षेत्रीय और संरचनात्मक असमानताओं से भी प्रभावित होती है। इन खाइयों को पाटने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और अवसंरचना में समन्वित निवेश की आवश्यकता है, विशेष रूप से उन जिलों में जो विकास में पिछड़े हैं, ताकि सभी बच्चों के लिए समान और समावेशी विकास सुनिश्चित किया जा सके।

6. अनुसंधान कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक विश्लेषण दोनों को जोड़ा गया। इसका उद्देश्य यह समझना था कि सामाजिक-आर्थिक और पारिवारिक कारक बच्चों के विकास और शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। 384 उत्तरदाताओं से प्राप्त मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ़्टवेयर से किया गया, जबकि गुणात्मक जानकारी अभिभावकों और शिक्षकों के साक्षात्कारों से प्राप्त हुई। इन दोनों तरीकों के संयोजन ने अध्ययन को विश्वसनीय, व्यावहारिक और प्रमाण-आधारित निष्कर्ष प्रदान किए, जो पारिवारिक और आर्थिक परिस्थितियों के बच्चों के विकास और सीखने के परिणामों पर प्रभाव को दर्शाते हैं।

6.1. औचित्य

इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणामों पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण करना है। यह समझने का प्रयास करता है कि आय स्तर, माता-पिता की शिक्षा, और पारिवारिक समर्थन बच्चों की सीखने की प्रक्रिया और व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं। अध्ययन में माता-पिता की भागीदारी, आर्थिक स्थिरता और संसाधनों की उपलब्धता में मौजूद प्रमुख अंतरालों की पहचान की गई है, ताकि पारिवारिक और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से समग्र बाल विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोगी सुझाव दिए जा सकें।

6.2. अनुसंधान रूपरेखा

इस अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान रूपरेखा अपनाई गई है, जो मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरीकों को एकीकृत करती है। इसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक कारकों के प्रभाव का संतुलित विश्लेषण करना है, जो बच्चों के विकास को प्रभावित करते हैं। यह संरचना सुनिश्चित करती है कि निष्कर्ष सांख्यिकीय रूप से सटीक, सामाजिक रूप से प्रासंगिक और बाल-केंद्रित शैक्षिक हस्तक्षेपों के डिज़ाइन में उपयोगी हों।

6.3. प्रश्नावली निर्माण

प्रश्नावली को पाँच भागों में विभाजित किया गया — सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, व्यवहारिक और पारिवारिक पहलू। इसमें पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल का उपयोग उत्तरदाताओं की धारणा को मापने के लिए किया गया। मात्रात्मक विश्लेषण में वन-सैंपल स्टैटिस्टिक्स, एनोवा, और कोएफिशिएंट्स परीक्षण परीक्षण शामिल थे, जिनका उपयोग सामाजिक-आर्थिक और पारिवारिक चर का बाल विकास पर प्रभाव मापने के लिए किया गया। प्रश्नावली द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेज़ी) रूप में तैयार की गई थी ताकि यह अधिक उत्तरदाताओं के लिए सुलभ हो सके।

6.4. डेटा संग्रहण

डेटा संग्रह दो चरणों में किया गया — प्राथमिक और द्वितीयक। प्राथमिक डेटा 384 प्रतिभागियों (अभिभावक, शिक्षक, और समुदाय के सदस्य) से संरचित ऑनलाइन प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किया गया। द्वितीयक डेटा सरकारी रिपोर्टों, यूनिसेफ, यूनेस्को

और बाल विकास से संबंधित प्रकाशित शोध अध्ययनों से लिया गया। दोनों प्रकार के आंकड़ों के संयोजन ने अध्ययन को गहराई, सटीकता और नीतिगत प्रासंगिकता प्रदान की।

7. परिणाम

टेबल 1: डेमोग्राफी

	आवृत्ति	प्रतिशत		आवृत्ति	प्रतिशत
आपका लिंग क्या है?			**आपकी शैक्षणिक योग्यता क्या है?**		
पुरुष	222	57.8	प्राथमिक	35	9.1
महिला	162	42.2	माध्यमिक	47	12.2
आप किस आयु वर्ग में आते हैं?			डिप्लोमा	27	7.0
18–30 वर्ष	101	26.3	ग्रैजुएट	99	25.8
31–40 वर्ष	127	33.1	पोस्ट ग्रैजुएट	119	31.0
41–50 वर्ष	84	21.9	पीएच.डी.	57	14.8
50 वर्ष से अधिक	72	18.8			

टेबल 1 से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, अध्ययन में कुल 384 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें से 57.8 प्रतिशत पुरुष और 42.2 प्रतिशत महिलाएं थीं, जिससे स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण में पुरुषों की भागीदारी थोड़ी अधिक रही। आयु वर्ग के अनुसार, 31–40 वर्ष के उत्तरदाता सर्वाधिक (33.1%) रहे, जबकि 18–30 वर्ष के 26.3 प्रतिशत और 41–50 वर्ष के 21.9 प्रतिशत प्रतिभागी शामिल थे। 50 वर्ष से अधिक आयु वाले 18.8 प्रतिशत प्रतिभागियों ने भाग लिया। शैक्षणिक योग्यता के संदर्भ में, सर्वाधिक प्रतिभागी पोस्ट ग्रैजुएट (31.0%) थे, उसके बाद ग्रैजुएट (25.8%) और माध्यमिक शिक्षित (12.2%) रहे। प्राथमिक स्तर की शिक्षा वाले 9.1 प्रतिशत, डिप्लोमा धारक 7.0 प्रतिशत और पीएच.डी. प्राप्त 14.8 प्रतिशत प्रतिभागी थे। ये परिणाम दर्शाते हैं कि सर्वेक्षण में मध्यम आयु वर्ग और उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की भागीदारी अधिक रही, जो अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता को मजबूत बनाती है।

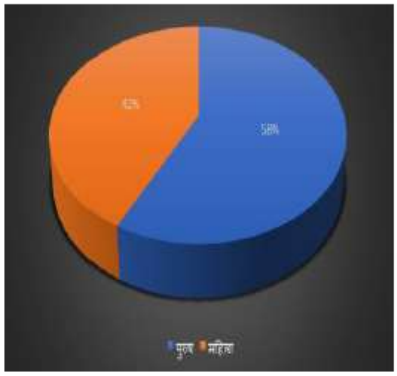

आपका लिंग क्या है?

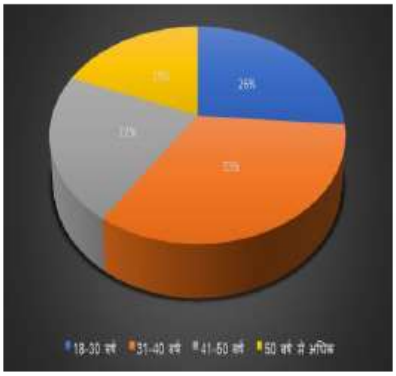

आप किस आयु वर्ग में आते हैं?

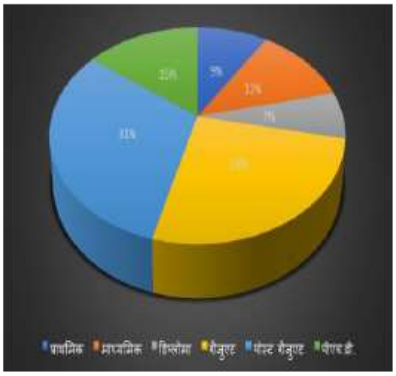

आपकी शैक्षणिक योग्यता क्या है?

उद्देश्य 1: सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणामों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

टेबल 2: वन-सैंपल स्टैटिस्टिक्स (One-Sample Statistics) उद्देश्य 1 के लिए

Parameter	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणाम	384	3.17	1.381	.070
परिवार की आय	384	3.32	1.348	.069

माता-पिता की शिक्षा	384	3.16	1.358	.069
संसाधन उपलब्धता	384	3.18	1.392	.071
सामाजिक वातावरण	384	3.22	1.336	.068
आर्थिक असमानता	384	3.16	1.401	.072

टेबल 2 के आंकड़ों के अनुसार, सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणामों पर स्पष्ट प्रभाव देखा गया है। कुल 384 प्रतिभागियों के औसत मान दर्शाते हैं कि परिवार की आय (औसत 3.32) और सामाजिक वातावरण (औसत 3.22) का बच्चों के विकास पर अधिक प्रभाव है। माता-पिता की शिक्षा, संसाधन उपलब्धता और आर्थिक असमानता के औसत मान लगभग समान (3.16 से 3.18) रहे, जो यह दर्शाता है कि ये सभी कारक भी बच्चों की प्रगति में योगदान करते हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो बच्चों का शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास पारिवारिक आय, शैक्षणिक स्तर और सामाजिक वातावरण से गहराई से प्रभावित होता है।

टेबल 3: मॉडल समरी उद्देश्य 1 के लिए

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate
1	.679[a]	.461	.453	1.021

Predictors: (Constant), आर्थिक असमानता, संसाधन उपलब्धता, सामाजिक वातावरण, परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा

टेबल 4: एनोवा (ANOVA) उद्देश्य 1 के लिए

Model	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Regression	336.228	5	67.246	64.553	.000[b]
Residual	393.769	378	1.042		
Total	729.997	383			

Dependent Variable: बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणाम

Predictors: (Constant), आर्थिक असमानता, संसाधन उपलब्धता, सामाजिक वातावरण, परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा

टेबल 3 और 4 के परिणाम दर्शाते हैं कि मॉडल का आर मान 0.679 और आर-स्क्वायर 0.461 है, जो बताता है कि सामाजिक-आर्थिक कारक बच्चों के विकास को 46.1% तक समझाते हैं। एनोवा परीक्षण में F मान 64.553 और महत्व स्तर .000 प्राप्त हुआ, जिससे यह सिद्ध होता है कि सभी कारक बच्चों के शैक्षणिक परिणामों पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

टेबल 5: कोएफिशिएंट्स (Coefficients) उद्देश्य 1 के लिए

Model	Unstandardized Coefficients		Standardized Coefficients Beta	t	Sig.
	B	Std. Error			
(Constant)	.282	.170		1.660	.008

परिवार की आय	.190	.050	.186	3.834	.002
माता-पिता की शिक्षा	.201	.049	.198	4.082	.045
संसाधन उपलब्धता	.107	.047	.108	2.305	.022
सामाजिक वातावरण	.200	.049	.194	4.090	.0085
आर्थिक असमानता	.200	.048	.203	4.190	.032

Dependent Variable: बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणाम

टेबल 5 के अनुसार, सभी स्वतंत्र चर बच्चों के शैक्षिक और विकासात्मक परिणामों पर सकारात्मक और महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। परिवार की आय (β=.186, Sig=.002) और माता-पिता की शिक्षा (β=.198, Sig=.045) प्रमुख प्रभावशाली कारक पाए गए। सामाजिक वातावरण (β=.194, Sig=.0085) और आर्थिक असमानता (β=.203, Sig=.032) ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। संसाधन उपलब्धता (β=.108, Sig=.022) का प्रभाव तुलनात्मक रूप से कम रहा। यह परिणाम दर्शाता है कि आर्थिक व सामाजिक स्थितियाँ बच्चों के विकास में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

उद्देश्य 2: बच्चों के विकास और शिक्षा में परिवार की भूमिका का मूल्यांकन करना।

टेबल 6: वन-सैंपल स्टैटिस्टिक्स (One-Sample Statistics) उद्देश्य 2 के लिए

Parameter	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
बच्चों के विकास और शिक्षा में परिवार की भूमिका	384	3.22	1.389	.071
माता-पिता की भागीदारी	384	3.13	1.348	.069
भावनात्मक सहयोग	384	3.24	1.364	.070
घर का वातावरण	384	3.22	1.360	.069
समय व्यतीत करना	384	3.23	1.375	.070
पारिवारिक मूल्य	384	3.23	1.371	.070

टेबल 6 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि बच्चों के विकास और शिक्षा में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। 384 प्रतिभागियों के औसत मानों से पता चलता है कि भावनात्मक सहयोग (औसत 3.24) और पारिवारिक मूल्य (औसत 3.23) बच्चों के समग्र विकास में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। घर का वातावरण (3.22) और समय व्यतीत करना (3.23) भी समान रूप से प्रभावशाली पाए गए। माता-पिता की भागीदारी (3.13) का औसत थोड़ा कम है, जिससे संकेत मिलता है कि सहभागिता के स्तर में सुधार की आवश्यकता है। समग्र रूप से, सकारात्मक पारिवारिक वातावरण बच्चों की शैक्षणिक और भावनात्मक प्रगति को सशक्त बनाता है।

टेबल 7: मॉडल समरी उद्देश्य 2 के लिए

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate
1	.603[a]	.363	.355	1.116

Predictors: (Constant), पारिवारिक मूल्य, समय व्यतीत करना, माता-पिता की भागीदारी, भावनात्मक सहयोग, घर का वातावरण

टेबल 8: एनोवा (ANOVA) उद्देश्य 2 के लिए

Model	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Regression	268.540	5	53.708	43.147	.000[b]
Residual	470.519	378	1.245		
Total	739.060	383			

Dependent Variable: बच्चों के विकास और शिक्षा में परिवार की भूमिका

Predictors: (Constant), पारिवारिक मूल्य, समय व्यतीत करना, माता-पिता की भागीदारी, भावनात्मक सहयोग, घर का वातावरण

टेबल 7 और 8 के परिणामों से स्पष्ट होता है कि मॉडल का आर मान 0.603 और आर-स्क्वायर 0.363 है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पारिवारिक मूल्य, भावनात्मक सहयोग, घर का वातावरण, समय व्यतीत करना और माता-पिता की भागीदारी बच्चों के विकास और शिक्षा में लगभग 36.3% प्रभाव डालते हैं। एनोवा परीक्षण में एफ मान 43.147 और सिग. मान .000 प्राप्त हुआ, जो मॉडल की सांख्यिकीय महत्वता को सिद्ध करता है। यह दर्शाता है कि परिवार के विभिन्न पहलू बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

टेबल 9: कोएफिशिएंट्स (Coefficients) उद्देश्य 2 के लिए

Model	Unstandardized Coefficients		Standardized Coefficients Beta	t	Sig.
	B	Std. Error			
(Constant)	.646	.185		3.496	.001
माता-पिता की भागीदारी	.172	.055	.167	3.143	.002
भावनात्मक सहयोग	.109	.053	.107	2.055	.041
घर का वातावरण	.124	.054	.122	2.293	.022
समय व्यतीत करना	.170	.053	.168	3.195	.002
पारिवारिक मूल्य	.225	.051	.222	4.362	.000

Dependent Variable: बच्चों के विकास और शिक्षा में परिवार की भूमिका

टेबल 9 के परिणामों से पता चलता है कि सभी स्वतंत्र चर बच्चों के विकास और शिक्षा में परिवार की भूमिका पर सकारात्मक और महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। पारिवारिक मूल्य (β=.222, Sig=.000) सबसे प्रभावशाली कारक पाया गया, इसके बाद समय व्यतीत करना (β=.168, Sig=.002) और माता-पिता की भागीदारी (β=.167, Sig=.002) का महत्वपूर्ण योगदान रहा। घर का वातावरण (β=.122, Sig=.022) और भावनात्मक सहयोग (β=.107, Sig=.041) का भी सकारात्मक प्रभाव देखा गया। ये निष्कर्ष दर्शाते हैं कि मजबूत पारिवारिक मूल्य, सहयोगी माहौल और सक्रिय सहभागिता बच्चों की शैक्षणिक व भावनात्मक प्रगति को सशक्त बनाते हैं।

8. निष्कर्ष

इस अध्ययन "बाल विकास में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पारिवारिक भूमिका का अध्ययन" से यह स्पष्ट होता है कि बच्चों का शैक्षणिक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों और पारिवारिक वातावरण से गहराई से जुड़ा हुआ है। जनसांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार, अध्ययन में 384 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें 57.8% पुरुष और 42.2% महिलाएँ थीं। अधिकतर उत्तरदाता 31–40 वर्ष की आयु वर्ग (33.1%) से थे, जबकि शैक्षणिक योग्यता में पोस्ट ग्रैजुएट (31%) और पीएच.डी. धारक (14.8%) प्रतिभागियों की संख्या अधिक रही। यह विविधता दर्शाती है कि अध्ययन में समाज के विभिन्न वर्गों का समावेश हुआ, जिससे निष्कर्षों की विश्वसनीयता और सामाजिक प्रासंगिकता बढ़ी।

कोएफिशिएंट्स विश्लेषण से यह निष्कर्ष सामने आया कि सामाजिक-आर्थिक कारकों में परिवार की आय (β=.186, Sig=.002), माता-पिता की शिक्षा (β=.198, Sig=.045) और आर्थिक असमानता (β=.203, Sig=.032) बच्चों के शैक्षणिक परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। वहीं पारिवारिक कारकों में पारिवारिक मूल्य (β=.222, Sig=.000), माता-पिता की भागीदारी (β=.167, Sig=.002) और बच्चों के साथ समय व्यतीत करना (β=.168, Sig=.002) प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ये परिणाम स्पष्ट करते हैं कि बच्चों के समग्र विकास के लिए केवल आर्थिक संसाधनों का होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि पारिवारिक समर्थन, नैतिक मूल्य, और भावनात्मक सहयोग भी उतने ही आवश्यक हैं। अतः सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने, अभिभावकों की शिक्षा और सहभागिता बढ़ाने तथा परिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एकीकृत प्रयास आवश्यक हैं, जिससे बच्चों का सर्वांगीण और संतुलित विकास सुनिश्चित हो सके।

संदर्भ

1. चकुया, एल. (2016). परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव: ज़विशावाने जिले के उदाहरण सहित अध्ययन।
2. अख्मेदोवा, ए., चुकानोवा, टी., वासिलेंको, आई., एवं माज़ाइलोवा, टी. (2025). विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के सामाजिक-आर्थिक कारक (बारनौल के समाजशास्त्रीय अध्ययन के उदाहरण सहित)। सोसियोडायनामिका.
3. नीमांटे, डी. (2023). बाल विकास को प्रभावित करने वाले पारिवारिक और पर्यावरणीय कारक। ह्यूमन, टेक्नोलॉजीज एंड क्वालिटी ऑफ एजुकेशन, 2023.
4. नागपाल, पी. (2020). भारत में बाल विकास की स्थिति। जर्नल ऑफ सोशल एंड इकनॉमिक डेवलपमेंट, 23, 24–43.
5. चंद्रशेखर, आर., धालीवाल, बी., रत्तानी, ए., सेठ, आर., गुरुप्रसाद, एस., खन्ना, एच., एवं शेट, ए. (2024). ग्रामीण भारतीय संदर्भ में बाल विकास मूल्यांकन उपकरणों का अनुकूलन। चिल्ड्रन, 11.
6. कृष्णा, सी., रामास्वामी, एस., एवं सेशाद्रि, एस. (2021). भारत में प्रारंभिक बाल देखभाल और विकास कार्यक्रम में बाल संरक्षण और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का एकीकरण। इंडियन पीडियाट्रिक्स, 58, 576–583.
7. डैलमाइजर, ई., गिब्बन्स, एस., बिगनार्डी, जी., एन्ल-आइर्विन, ए., सिउग्ज़डाइट, आर., स्मिथ, टी., उह, एस., जॉनसन, ए., एवं ऐस्टल, डी. (2019). बच्चों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शिक्षा के बीच प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संबंध: मानसिक स्वास्थ्य, दृष्टिकोण और संज्ञान के माध्यम से मार्ग। करंट साइकोलॉजी, 42, 9637–9651.
8. युगोवा, ओ. (2021). बच्चे के मनोवैज्ञानिक विकास पर सामाजिक-मानसिक कारकों और पारिवारिक वातावरण का प्रभाव। स्पेशल एजुकेशन.
9. मिश्रा, पी., एवं एपी, ए. (2014). स्कूल छोड़ने वालों का पारिवारिक एटियोलॉजी: एक मनो-सामाजिक अध्ययन।
10. हार्टस, डी. (2011). परिवारों की सामाजिक पृष्ठभूमि का प्रभाव: सामाजिक-आर्थिक कारक, घर में सीखना और छोटे बच्चों की भाषा, साक्षरता और सामाजिक परिणाम। ब्रिटिश एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, 37, 893–914.
11. चक्रवर्ती, एस., रघुनाथन, के., ऑल्डरमैन, एच., मेनन, पी., एवं गुयेन, पी. (2019). भारत की एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना: 2006 और 2016 में समानता और कवरेज की सीमा। बुलेटिन ऑफ द वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन, 97, 270–282.
12. वीवर, जे., सुख्तनकर, एस., निएहाउस, पी., एवं मुरलीधरन, के. (2024). बाल विकास के लिए नकद हस्तांतरण: भारत से प्रायोगिक साक्ष्य। SSRN इलेक्ट्रॉनिक जर्नल.
13. थनेश, एस., एवं उथायकुमार, एस. (2014). वमराज्च्ची डिवीजन की शिक्षा स्थिति में सामाजिक–आर्थिक कारकों की भूमिका।
14. नारायण, एम. (2024). भारत में बाल विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (UN-SDGs) का ढांचा: विकेंद्रीकृत विश्लेषण से साक्ष्य। सस्टेनेबल डेवलपमेंट.
15. राव, एन., एवं कौल, वी. (2018). भारत की एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना: विस्तार में आने वाली चुनौतियाँ। चाइल्ड: केयर, हेल्थ एंड डेवलपमेंट, 44, 31–40.